हम जानते हैं–

१. हिन्दी में अ से औ तक स्वर वर्ण हैं। स्वर वर्ण मात्रा रूप में भी आते हैं, पर व्यंजन वर्णों के साथ ।

वर्ण -	अ	आ					ऋ				औ
मात्रा-		ा					ृ				ै
जैसे-	क	का					कृ				कौ

(खाली स्थानों को भरिए)

२. हिन्दी में ह्रस्व और दीर्घ मात्राओं का स्पष्ट उच्चारण होता है । दीर्घ मात्रा में अधिक समय लगता है और बल होता है।

३. सभी वर्णों के ऊपर रेखा होती है । इसे शिरोरेखा कहते हैं ।

४. अंत में अ वाले शब्द का हलन्त उच्चारण होता है; जैसे– बात्, सात्, कमल्, खटमल् आदि ।

५. इन शब्दों को जल्दी–जल्दी पढ़िए :

कल	काला	कली	कील	कालू	कूल
काला	काली	केला	काले	भालू	कूल
कोल	कौल	कला	कैलास	बेल	बैल
कि	की	पिता	पीता	मेल	मैल
औरत	औषध	ओस	ऋषि	कृषि	घृत

('ऋ' का उच्चारण 'रि' जैसा होता है ।)

६. फिर पढ़िए : (। पर जोर दीजिए ।)

कल	नल	काला	नीला	गीता	चीता
फल	फूल	घर	घोट	सत्	चित्
राम	आम	राजधानी	चार	चाँद	शरणागत
झटपट	चमचम	चौंसठ	पचहत्तर	निन्यानबे	

हम यह भी जानते हैं :

१. हिन्दी में 'क' से 'ह' तक व्यंजन वर्ण हैं ।

क				ङ
च				
ट				
त				
प				
	य	र	ल	व
	श	ष	स	ह

(खाली स्थानों को भरिए)

२. व्यंजन के अंत में अ मिला होता है । जैसे क् + अ = क यानी क् म् व्यंजन हैं । संयुक्त व्यंजन लिखते समय और बोलते समय पहला व्यंजन हलन्त – (क्) (क),(म्) (म) जैसे लिखा और बोला जाता है ।

३. संयुक्त व्यंजन के पहले व्यंजनों के कई रूप होते हैं–

(i) आधा लिखकर, जैसे– क – क्, ख – ख्, ग –ग्

जैसे – क्क ख्य ग्य

(ii) हलन्त लगाकर, जैसे– छ्, ट्, द् आदि

(iii) पूरे बदले रूप, जैसे –

क् + ष = क्ष

त् + र = त्र

ज् + ञ = ज्ञ

श् + र = श्र

(iii) र के तीन रूप हैं, जैसे–

र् + क = र्क

क् + र =क्र

ट् + र = ट्र

पढ़िए : कर्म – क्रम, ग्राम – गर्म, चक्र – अर्क, कोर्ट – ट्रक ।

५. हम जानते हैं कि ये अलग–अलग ध्वनियाँ हैं–

ब	व	ज	य	श	स

इनको पढ़िए :

बन – वन	काज – कार्य	आज – आय	यश – जग
बस – वश	सूरज – सूर्य	कास – काश	सेर – शेर
बहन – वहन	युवक – सबक	यमुना – यशोदा	यज्ञ–जिज्ञासा

६. निम्नलिखित संयुक्त व्यंजनों को दो तरह से लिखा जाता है–

त् + त = त्त – त्त द् + द = द्द – द्द

क् + त = क्त = क्त द् + य = द्य – द्य

द् + भ = द्‌भ – द्भ　　　द् + म = द्‌म – द्म
श् + च = श्‌च – श्च　　　श् + व = श्‌व – श्व
ह् + न = ह्‌न – ह्न　　　ह् + र = ह्‌र – ह्र
ह् + व = ह्‌व = ह्व　　　ह् + य = ह्‌य – ह्य आदि ।

७. '◌ं' और '◌ँ' :(अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु) सामान्यतः स्वरों के साथ चन्द्रबिन्दु और व्यंजनों के साथ अनुस्वार (बिन्दी) का प्रयोग होता है । स्वरों के साथ अनुस्वार भी आता है ।

आँसू	चंदा	बंध	मंद	कंस	पंप	तंग	संतान
काँटा	चाँद	बाँध	माँद	टंकण	मंगन	गंगा	साँवला

लेकिन : ईंधन, औंधा, ऐंठना आदि स्वरों में बिंदी लगाई जाती है ।
हंस – हँस, अंक – आँक आदि रूप हैं ।

८. ध्यान दीजिए :

ङ, ञ, ण, न और म– इन नासिक्य व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन बनाते समय दो–दो रूपों में लिखा जाता है, जैसे–

कंगन – कङ्गन, कंज – कञ्ज, डंडा – डण्डा, पंत – पन्त, चंपा – चम्पा आदि ।

हम पढ़ सकते हैं–

१. मैं इन शब्दों को साफ – साफ पढ़ लेता हूँ–

डॉक्टर, पक्का, ख्याति, मधुमक्खी, वाग्देवी, उत्कल, तत्काल, रक्त, डंका, चाणक्य, माध्यम, सन्मार्ग, चक्रधर, राष्ट्रीय, वनांचल, सांसद, मशक्कत ।

२. क्या तुम इनको पढ़ सकते हो ?

उन्मुक्त, महत्त्व, परम्परा, स्टेशन, साक्षात्कार, राष्ट्रपति, लापरवाह, शीशम, ग्रीष्म, उन्माद, ब्रह्मानन्द, सौन्दर्य, उत्तुंग, गाम्भीर्य ।

३. हमारे गुरुजी इन शब्दों का सही उच्चारण ऐसे सिखाते हैं –

आमरण, ऐनक, ऐरावत, औरत, रुचि, ऊँट, इनाम, सर्वांगीण, चबूतरा, चौक, ऋषि, कर्ण, यज्ञकार्य, वाङ्मय, आकांक्षा, शरबत, शाश्वत, एहसास, बेवकूफ, मर्यादा ।